प्रमोद मंजरी

इस पुस्तक में प्रथम तो बहुत से हास्य भरे लतीफ़े दिये गये हैं, फिर गज़ल, ठुमरी, लावनी, दादरा, प्रभाती, मलार, होली, रसिया, परज, कवित्त, सवैया, सारंग इत्यादि का नवीन संग्रह है ॥ अंत में बहुत सी लाग़बाज़ी भरी हैं जो अकसर बाज़ीगर लोग किया करते हैं ॥

BY

KHILAWAN LAL

JUBBULPORE.

" त्रिधभरोस यंत्रालय " जबलपूर में टीका राम के द्वारा मुद्रित हुई

—*:0:*—

1892

पहिली बार १००० जिल्द

दाम ≈)॥ डाक महसूल)॥

शुद्धाशुद्ध

पेज	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२६	२	मुलिन	पुलिन
२६	१९	सव	सवन
२६	२३	खव	खूव
२७	३	धारन	पानन
३१	९	छोका	छोके
३१	१२	गामिनी	जामनी
३१	१३	घली	थली
३२	८	गोहत	जोहत
३३	१४	चाच	चोंच
३६	१९	वस्ल	वस्ल में
४५	५	एहिड	एसिड
४५	१९	उली	डली

प्रमोद मंजरी

॥ पहिला लतीफा ॥

(शायरी)

एक मालगुज़ार को शौक़ शायरी पैदा हुआ, बिचारा कि वे सुहबत कोई बात हासिल होना मुहाल है, इस ख़याल से एक शायर को नौकर रक्खा, शायर भी खुदा के फ़ज़ल से, जाहिल भपाट, अलिफ़ के नाम भाला भी न जानते थे एक रोज़ का ज़िकर है कि मालगुज़ार साहेब का दर्बार लगा था कि इतने मे शायर साहेब तशरीफ़ लाए, मालगुज़ार ने शायर साहेब को देख कर कहा " आप हैं "? शायर ने फ़ौरन जवाब दिया" आपके बाप हैं,„ ज़मीदार साहेब निहायत खुश हुए बोले वाह भाई खूब तुक मिलाई अरे भाई कोई है, शायरसाहेब को पांचसौ रुपये इनाम दो :- और सुनिये एक वक्त मालगुज़ार और शायर दोनो हाथी पर सवार होकर तरफ़ एक गांव के गये इत्तफ़ाक़ से हाथी का पैर एक गढ़हे में घुस गया ज़मीदार साहेब हाथी की निजात के लिये खुदा को ईबादत करने लगे." ऐ बहरुल अजायब ". शायर ने फ़ौरन तुक मिलाई " हाथी मय सवार ग़ायब " मालगुज़ार साहेब निहायत खुश हुए बोले " वाह शायर । बहुत शायर देखे पर तुम से न देखे, फ़ौरन तुक मिलाते हो, लो यह कंठा हमने तुम्हें इनाम में दिया-" कई दिन बाद एक रोज़ मालगुज़ार साहेब कोई आफ़त में मुबतिला गमग़ीन बैठे थे, शायर साहेब भी मौजूद थे, मालगुज़ार साहेब ने एक शैर बनाया " न मालूम हाय किस्मत में हमारे क्या लिखा होगा,; शायर साहेब" ने फ़ौरन जवाब दिया" मुड़ा सर आपका हो गा सवारीमें गधा होगा" मालगुज़ार साहेब सब रंज भूल गये और शायर साहेब पर निहायत खुश हुए॥

॥ दूसरा लतीफ़ा ॥

(प्रेम)

एक पंडित जी कथा बांच रहे थे, एक स्त्री भी कथा सुनने को आई और कुछ देर बाद कथा सुनते २ सिसक सिसक कर रोने लगी· पंडित जी बोले वाह वाई साहिब को बड़ा प्रेम उत्पन्न हुआ वाई साहेब और भी ज़ोर से रोने लगीं, तबतो सब ने पूछा वाई साहेब आप रोतीं क्यों हैं वाईसाहेब बोलीं भइया कुछ नहीं कहने की बात नहीं है·
पंडित जी बोले नहीं वाई साहेब बताइये तो बताने में कोई चिन्ता नहीं है· तब वाई साहेब बोलीं पंडित जी जब आप कथा बाचते हैं तब आप की डाढ़ी हिलती है, मैंने एक बकरा पाला था सो उसकी डाढ़ी आप की डाढ़ी के माफिक थी अब बकरा मर गया है, सो मुझे आप की डाढ़ी देख कर उसकी याद आगई, इस में रोने लगी, पंडित जी इतनी बात सुनकर बड़े शरमिन्दा हुए ॥

॥ तीसरा लतीफ़ा ॥

(बातों का रफ़ूगिर)

एक शख्स एक बादशाह के दरबार में गया और बादशाह से बोला हजूर मैं बहुत दूर से आप का नाम सुनकर आया हूं बहुत ख़राब हाल हूं उम्मेदवार हूं कि हुज़ूर के यहां कोई नोकरी खाली हो तो करूं· बादशाह ने पूछा कि तुम क्या हुनर जानते हो? वह बोला हुज़ूर मैं रफ़ूगिर हूं बातों पर रफ़ू करता हूं बादशाह ने पूछा क्या रोज़ लोगे रफ़ूगिर बोला हुज़ूर पांच रुपया रोज़. बादशाह का वज़ीर बड़ा हासिद था बादशाह से कहने लगा कि हुज़ूर ये कोई लुच्चा है रफ़ू कपड़े पर होती है बातों पर नहीं यह ठग है रुपया ठग २ कर खाया चाहता है· इस पर रफ़ूगिर बादशाह से बोला कि हुज़ूर को धीरे २ मालूम हो जायगा. खैर बादशाह ने उसके दो रुपया मुकर्रर करदिये और

कहा जब हम खुश होंगे तब तुम्हारी तनख़्वाह बढ़ा देंगे। एक रोज़ का ज़िकर है बादशाह दरबार में बैठे थे वज़ीर से पूछ उठे वज़ीर हमारे जिस्म भर में बाल हैं लेकिन हथेली में नहीं इसका क्या सबब ? वज़ीर ने दिल में कहा अब रफ़ूगिर साहिब को रफ़ू देखता हूं बोला आज हुज़ूर उस रफ़ूगिर को बुलवाइये वह इस बात का जवाब ठीक देगा। बादशाह ने रफ़ूगिर को बुलवाया और उससे पूछा क्यों जी हमारे जिस्म भर में बाल हैं हथेली में नहीं इसका क्या सबब ? रफ़ूगिर ने जवाब दिया हुज़ूर आप बड़े सख़ी हैं ख़ैरात ज़्यादा करते हैं इससे हथेली में बाल नहीं है, वज़ीर यह बात सुनकर जल उठा और गुस्से में आकर बोला अच्छा बादशाह तो ख़ैरात करते हैं इस वजह से उनकी हथेली में बाल नहीं हैं भला हमारी हथेलीमें बाल क्यों नहीं है? रफ़ूगिर बोला तुम अपि अफ़सोस मना करते हो कि बादशाह सब धन लुटाये देते हैं वज़ीर का गुस्सा और भी दूना हुआ रफ़ूगिर से बोला और तेरी हथेली में क्यों नहीं हैं रफ़ूगिर बोला (बादशाह की तरफ़ इशारा करके) ऐसे सख़ियों का माल लेते लेते। वज़ीर का जवाब शर्मिन्दा हो ख़ामोश हो रहा बादशाह बड़े खुश हुये हुक्म दिया कि रफ़ूगिर के पांच रुपया रोज़ कर दिये जांय ॥

॥ चौथा लतीफ़ा ॥

(ख़ुदा की सुरमा दानी)

कुछ आदमी लाल बुझक्कड़ के गांव के एक रास्ते से जा रहे थे वहां एक कोल्हू की लाठ पड़ी देख बड़े ताज्जुब में आये कि यह क्या है विचार किया चलो भाई बाबा बुझक्कड़ से पूछें बुझक्कड़ के घर जाने पर मालूम हुआ कि बुझक्कड़ तो मरगए बुझक्कड़ का लड़का था सो वह आया और कोल्हू की लाठ देख कर बोला सुनो भाई

बाबा बुझक्कड़ मर गए रह गए बेटा नामीं
पुरानी होकर गिर पड़ी ख़ुदा की सुरमा दानीं
देहकानी बोले वाह जैसे चतुर बाबा बुझक्कड़ थे वैसे उनके बेटाभये ॥

॥ पांचवां लतीफा ॥

(एक मदकची)

एक मदकची मियां रात को जब हुक्का पी चुके तब हुक्के की सटक हुक्के से निकाल कर खूंटी पर टांग दी और सो रहे आधी रात को मियां साहेब की नींद खुल गई नशा खूब था नज़र जो सटक पर पड़ी तो मियां साहेब को ऐसा ख्याल बंधा के सांप गुड़री मारे खूंटी पर बैठा है घबड़ाये चिल्लाये या खुदा वन्द करीम तू बड़ा मालिक है आज तेरे ही फ़ज़ल से मेरी जान बची वरना यह मूजी मुझे जीता काहे को छोड़ता ऐसा कह कर उठे और तलवार लेकर उस सटक को जिसे वह सांप समझते थे टुकड़े २ करके पलंग के नीचे फेंक दिया और फिर सो रहे सुबह मियां साहेब का लड़का मियां साहिब को जगाने को आया और ज्योंही मियां साहिब को जगाया त्योंही मियां [illegible] लड़के को गले से लगा कर जोर से रोने लगे मियां साहिब को [illegible] देख लड़का भी रोने लगा इन दोनों को रोने की आवाज़ सुन कर बीवी और नौकर चाकर भी घर के अंदर से निकल आये और इन दोनों को रोते देख वे सब भी रोने लगे जब सब मिल के खूब रो चुके तब लड़के ने मियां साहिब से पूछा बाबा जान हाल तो कहिये हुआ क्या मियां बोले बेटा हम तुम्हारी तक़दीर से बचे नहीं तो कल मर होते एक सांप कल मेरे बिस्तर पर आगया काटे ही खाता था मेरी नींद खुल गई सो मैंने तलवार से उस के टुकड़े २ कर के पलंग [illegible] नीचे डाल दिया इतना कह फिर रोने लगे लड़के ने जो बिस्तर [illegible] कर देखा तो मालूम हुआ के यह तो हुक्के की सटक है कहने लगा बाबा जान आपने तो ग़जब किया नाहक इतने घबड़ा गये यह तो सांप नहीं है हुक्के की सटक है तबतो मियां साहिबके जीमें जी [illegible] बोले बेटा तूने भला खौफ़ मिटाया अब न रोऊंगा अब दम में दम मैंने तो उसे सांप ही जाना था ॥

॥ छटवां लतीफा ॥

(भैंस का दूध)

एक मदकची के लड़का हुआ एक दिन मदकची अपनी औरत से बोला के लड़के को दूध की बड़ी तकलीफ़ होती है सो एक भैंस खरीदना चाहिये औरत बोली हां यह तो बड़ी अच्छी बात है भैंस के आजाने से बड़ा आराम मिलेगा दूध दही भी घर में होगा कोई मेहमान आवेगा उसे दिया करेंगे कभी २ मैं अपने मायके भेज दिया करूंगी औरत का इतना कहना था कि मियां साहेब को बड़ा गुस्सा आया ले के डंडा लगे बीवी को कूटने हराम जादी भैंस आते देर नहीं हुई और सब दूध मायके भेज दिया औरत बोली अजी मारते क्यों हो अभी तो भैंस पैसे कुछ खरीदी नहीं अभी मैंने कहां से दूध मायके भेज दिया लेकिन मियां साहेब ने कुछ भी ना सुना पीटते ही गये एक मजदूर ने यह तमाशा देखा उसे उस औरत पर रहम आया सो उसने भी एक डंडा उठाके मदकची को खूब पीटा और कहा हरामजादे अपनी भैंस को पकड़ के बांधता नहीं है हमारा सब खेत चरगई जब मदकची मियां खूब पिटे तब बोले अजी मुझे क्यों मारते हो अभी मैंने भैंस कहां खरीदी जो तुम्हारा खेत चरगई मजदूर ने जवाब दिया जब तुमने भैंस नहीं खरीदी तब तुम्हारी औरत ने दूध मायके कैसे भेज दिया ॥

॥ सातवां लतीफा ॥

(बेअदबी)

एक आग़ा साहेब एक रजवाड़े में गुनहगार ठहराये गये उन को सज़ा दीगई कि इन के बाल मुड़वा कर गधे पर बैठाको और शहर के चारों तरफ फिराव मुआफ़िक़ हुकम आग़ा साहेब का मूड़ मुड़वाया और गधे पर बैठाल कर शहर के चारों तरफ फिराया तमाशा समझ शहर के लड़के पीछे २ गुल मचाते हुए दौड़े जब आग़ा साहेब अपने वतन को गए तब उन के दोस्त लोग उन से मिलने को आये और पूछने लगे कहिये आग़ा साहेब हिन्दुस्तान कैसा मुल्क है आग़ा साहेब बोले मुल्क हिन्द खूब अस्त इन्आम मुफ़्त, दुरुखवारी मुफ़्त, फ़ौजे तिफ़्लां मुफ़्त ॥

॥ आठवां लतीफा ॥

(मुंशी खाने के शुतर)

एक आदमी एक बादशाह के यहां शुतर खाने के मुंशी बनाये गये एक रोज़ का ज़िकर है कि बादशाह की सवारी आ रही थी वे सामने खड़े थे बादशाह की नज़र इन पर पड़ी नज़र पड़ते ही बादशाह ने पूछा तुम कौन हो वे घबड़ाहट के मारे जल्दी से कहते क्या हैं जहां पनाह मैं मुंशी खाने का शुतर हूं बादशाह थे दिल्लगी बाज़, हुकम दिया कि इस शुतर को बैल गाड़ी में जोत कर हमारे शहर से बाहर कर दो ॥

॥ नवां लतीफा ॥

(नाई और बीरबल)

एक वक्त एक नाई से और बीरबल से गांठ पड़ गई नाई ने विचारा कि किसी न किसी तरह बीरन को मरवा डालना चाहिये एक रोज़ बाल बनाते वक्त नाई बादशाह से बोला हुज़ूर बहुत रोज़ होगये आपने अपने बाप, दादों, की खबर नहीं मंगवाई कि वे कैसे हैं वे अपने दिल में क्या कहते होंगे बादशाह ने कहा कि खबर किस के हाथ मगवावें और किस तरकीब से मंगवावें नाई बोला हुज़ूर आप के यहां जो सब से होश्यार आदमी हो उस को दीजिये जाने की तरकीब मैं बताता हूं बादशाह ने कहा कि हमारे यहां तो सब से होश्यार बीरन है ऐसा कहकर बीरन को बुलवाया और बीरन से कहा कि बीरन जाव हमारे बाप, दादों, को खबर ले आव नाई बोला हुज़ूर जाने की यह तरकीब है कि एक मकान बनवाइये उस में खूब आग लगा दीजिये जैसे २ धुआं तेज़ होगा वैसे २ धुआं के ज़ोर से बीरन ऊपर उड़ेंगे बीरन बोले बहुत अच्छा जहां पनाह मुझे एक महीना की रुखसत दीजिये बाद एक महीना के मैं जाऊंगा बादशाह ने कहा अच्छा, यहां बीरन ने क्या काम किया कि नीचे २ अपने मकान

तक सुरंग लगादो और ऊपर से पत्थर ढांक दिये जिस में मालूम न पड़े जब यह सब हो चुका तब बीरन बादशाह के पास गये और बोले हुजूर आज मैं जाता हूं ऐसा कहकर उस पत्थर पर बैठ गये और बादशाह से बोले कि अब उस नाई को बुलवाइये तो वह घरके भीतर से आग लगादे बादशाह ने उस नाई को बुलवाया नाई ने आकर बड़ी खुशी से आग लगादी जब मकान में आग लग गई बीरन फौरन पत्थर खिसका कर घर पहुंचे और तीन महिने तक घर में खूब ऐश आराम किया तीन महिने तक बाल भी नहीं बनवाये बाद तीन महीने के बादशाह के दर्बार में गये बादशाह ने बीरन को देखकर कहा क्यों बीरन खबर ले आये बीरन बोले हां सर्कार खबर ले आया बादशाह बोले क्यों बीरन सब अच्छी तरह हैं बीरन बोले हां हैं तो अच्छी तरह मगर सब के बाल बढ़ गये हैं वहां नाई नहीं है ३ महिने में मेरे भी बाल इतने बड़े २ हो गये सो आप यहां से कोई होशयार नाई भेज दीजिये बादशाह ने कहा यह कौन बड़ी बात है उसी नाई को बुलवाव जिस ने तुम्हें तरकीब बताई थी वह बड़ा होशयार है उसी ने तुम्हें भेजा था उसी अकल से तुम उस को भेजदो गरज वह नाई बुलवाया गया बीरन ने उसे एक मकान में बन्द करके चारों तरफ से आग लगादी थोड़ी देर में नाई साहेब जल भुनकर खाक हो गये।

॥ दसवां लतीफा ॥

(कन्जूसी)

एक कन्जूस पुरबिया को जरूरत कुछ चीज खरीदने की हुई हथेली में रुपया दाब और बनिये की दुकान पर पहुंचा जब दुकान पर पहुंच कर हथेली खोली तो हाथ की पसीने से रुपया भींज गया पुरबिया बोला देखो हो कस रोवत है इतना कह रुपया को आंख से लगा लिया और कहने लगा न रोवा हो हम आपन मूंड़ फोड़ब तुम्हार न फोड़ब ॥

॥ ग्यारहवां लतीफा ॥

(उर्दू की खराबी)

एक शख्स ने एक बड़े आदमी को हिन्दी में दरख्वास्त लिखी "खुदा हुजूर की उम्र दराज़ करे हुजूर की नज़र गुरवा परवरी पर ज्यादा है इस से उम्मेद है कि हुजूर मुझ पर भी नज़रे इनायत रक्खें उन ने अपने मुन्शी को हुकुम दिया कि उस दरख्वास्त को पढ़ो मुन्शी ने दरख्वास्त इस तौर से पढ़ी "खुदा हुजूर को उमर दराज़ करे हुजूर को नज़र गुर पापर वरो पर ज्यादा है इस से उम्मेद है कि हुजूर मुझ पर भी नज़र इनायत रक्खें ॥

॥ बारहवां लतीफा ॥

(तासीर इश्क)

एक बादशाह की लड़की बहुत हसीन थी उस पर एक शख्स आशिक हो गया और इस इश्क की शुहरत शहर भर में मशहूर हो गई यहां तक कि यह बात बादशाह के कान तक पहुंची बादशाह ने अपने अक्लमन्द वज़ीर को बुलाया और उस से बोले ऐ वज़ीर मुझे बड़ी शर्म आती है कि मेरी लड़की पर रियाया आशिक हो और यह बदनामी सारे शहर में फैल रही है कोई ऐसी तदबीर बता कि जिस से यह बदनामी दूर हो-वज़ीर ने जवाब दिया कि हुजूर उस आदमी को बुलवाइये और उस से यह कहिये कि वह सात खंड के ऊपर से गिरे अगर जिन्दा बचेगा तो इस लड़की की शादी उस के साथ कर देंगे ग़रीबपरवर न वह इस बात को मंजूर करेगा और न बदनामी फैलेगी बादशाह ने इस बात को पसंद किया और उस आशिक को बुलवा कर यही फरमाइश की आशिक पक्का आशिक तो था ही उस ने फौरन इस बात को मंजूर किया और सात खंड के ऊपर से यह अशआर कहता हुआ गिरा ॥

"जाना मरा व मन बयारेद
ईं मुरदा तनम ब ऊ सिपारेद

गर यौम: क़ामद वरों ब्यानम

ये तीन शेर कहे थे कि वह आशिक ज़मीन पर गिर पड़ा और मरगया ये तमाशा देखने को वहां एक हुजूम इकट्ठा था सादी साहेब भी वहां मौजूद थे फौरन बोल उठे "चूं ज़िन्दा शवम अजब मदारेद" जब यह चौथा मिसरा बादशाह ने सुना तब बड़े ताज्जुब में आये और पूछा यह मिसरा किस ने कहा लोगों ने सादी साहेब को बादशाह के रूबरू खड़ा कर दिया बादशाह ने पूछा ऐ शख्स तूने यह चौथा मिसरा क्या समझ कर कहा सादी साहेब बोले आलम-मायाब में आप को ठीक मालूम हो जायगा अपनी लड़की से इस के होठों पर बोसः लिवाइये देखिये क्या होता है खैर ऐसा ही किया गया जब लड़की आई और उस ने उस आशिक के लबों का बोसः लिया फौरन उस मुरदः तन में जान पड़ गई और उठते ही उस आशिक ने वही शेर पढ़ा जो सादी साहेब ने फरमाया था "चूं ज़िन्दा शवम अजब मदारेद" बादशाह को बड़ा ताज्जुब हुआ अपनी लड़की की शादी उस आशिक के साथ कर दी और सादी साहेब को बहुत सा इनाम देकर रुखसत किया ॥

॥ तेरहवां लतीफा ॥

(हाज़िर जवाबी)

एक स्कूल मास्टर हाथ में बेंत लिये हुए लड़के पढ़ा रहे थे बेंत सीधा कर के बोले हमारे बेंत के कोने के रूबरू एक गधा बैठा है वह लड़का जो बेंत के रूबरू बैठा हुआ था बड़ा शोख़ था फौरन कह उठा मास्टर साहिब बेंत के दो कोने होते हैं आप किस कोने का जिकर करते हैं मास्टर बिचारे शरमिन्दा हो कर चुप हो रहे ॥

॥ चौदहवां लतीफा ॥

(कालीदास)

एक समय राजा भोज कालीदास पर क्रोधित हुए और काली-

दास को शहर से बाहर निकलवा दिया कुछ दिन पश्चात् राजा को फिर कालीदास की याद आई कई जगह ढुंढ़वाया पर कालीदास का कहीं भी पता न लगा इस पर राजा ने युक्ति सोची और दर्बार में यह कह दिया कि जो कोई नवीन श्लोक बना लावे उसे एक लाख रुपया इनाम दिया जावेगा और अपने दर्बार में तीन पंडित ऐसे नोकर रक्खे कि पहिले पंडित को एक बार श्लोक सुनने से दूसरे को दो बार तीसरे को तीन बार सुनने से याद हो जाता था इस कारण कई पंडित श्लोक बना लाये परंतु कोई भी नवीन न ठहराया गया जो कोई पंडित कोई श्लोक बना लाता उस को दर्बारी पंडित पुराना ठहरा देते और कह दिया करते यह तो हमें याद है ऐसा कह कर पढ़ कर सुना देते गरज एक लाख रुपया किसी को भी न मिला एक पंडित को रास्ते में कालो दास मिल गए कालो दास ने पंडित से पूछा कहां जाते हो पंडित ने सब वृतांत कालो दास से कह सुनाया इस पर कालो दास ने पंडित को एक श्लोक बना कर दिया और कहा जाव तुम राज सभा में इसे सुनाना तुम्हें एक लाख रुपया मिल जायगा पंडित बड़े हर्ष पूर्वक राजा भोज को सभा में गया और राजा से बोला धर्मावतार मैं एक नवीन श्लोक बना लाया हूं राजा ने कहा पढ़ो पंडित ने यह श्लोक पढ़ा:—

स्वस्ति श्री भोज राजा त्रभुवन विदिते धार्मिकः सत्य वक्ता
पिताते प्रग्रहीतान वतिन वधिका रत्न कोट्यो मदीयाः
तास्त्वं देहीति राजन सकल बुध जनैर्ज्ञयते सत्य मे तत
नोवा जानंतियत् सम कृति मथ वा देहि लक्षंत तो मे

अर्थ

हे भोज राजा आप धार्मिक और सत्य बोलने वाले तीनों लोक में प्रख्यात हैं आप के पिता ने मुझ से ९९ क्रोट रुपया लिये थे सो आप को मुझे देना चाहिये यह बात आप की सभा के पंडित भी जानते हैं और यदि आप के सभा के पंडित इसे नहीं जानते तो फिर यह श्लोक नया है तो मुझे एक लाख रुपया इनाम दीजिये·

यह श्लोक सुन के सभा के सब पंडित चुप हो रहे कारण

यदि कहते हैं कि पुराना है तो ८८ क्रोड़ रुपया राजा को देना पड़ते हैं और नहीं तो नवीन श्लोक के एक लाख रुपया राजा ने अपने जी में विचारा कि इतने दिन हुए कोई भी ब्राह्मण एक लाख रुपया नहीं ले पाया जान पड़ता है कि यह श्लोक काली दास का बनाया हुआ है राजा ने पंडित से पूंछा पंडित जी तुम्हें काली दास कहां मिल गए पंडित जी ने पता बता दिया राजा ने पंडित को एक लाख रुपया देकर बिदा किया और काली दास को दर्बार में बुला लिया"

॥ पंद्रहवां लतीफ़ा ॥

(अकबर भारत)

एक समय अकबर बादशाह ने बीरबल से कहा बीरबल जैसे सब के भारत बने हैं जैसे महाभारत इत्यादि वैसा हमारा भी भारत बनाव और उस का नाम अकबर भारत रक्खो बीरबल ने कहा बहुत अच्छा मैं अकबर भारत बनाऊंगा अभी मुझे एक लाख रुपया दो छः महीना में अकबर भारत तैयार कर लूंगा बादशाह ने बीरल को एक लाख रुपया दे दिया बीरल रुपया लेके घर गये जब छः महिना हो गये तब बीरबल एक कोरी किताब लेके राजा के पास पहुंचे राजा ने कहा बीरबल क्या अकबर भारत बना लाये बीरल बोले हां सरकार अकबर भारत तो तैयार हो गया परन्तु थोड़ीसी कसर रही है वह मुझे रानी साहिबा से पूछना है आप हुक्म दीजिये तो मैं रानी साहेब से पूछ आऊं राजा बोले अच्छा जाव पूछ आव बीरल रानी के पास गये रानी बोलीं बीरल क्या पूंछते हो बीरल बोले रानी साहेबा राजा के हुक्म के माफ़िक अकबर भारत बन गया थोड़ीसी कसर है महा भारत में द्रौपदी का वृतांत है इस में आपका होगा द्रौपदी के ५ पति थे सो तो मुझे मालूम है परन्तु आप के पांच पति कौन से हैं सो मुझे बताइये एक तो मालूम है कि राजा साहिब हैं चार और कौन हैं सो बता दीजिये जिस में यह पुस्तक तैयार होजाय रानी साहेबा को यह सुनकर बड़ा क्रोध आया और किताब लेकर जलादी जब अकबर बादशाह ने यह वृतांत सुना तब बीरबल को बुलाकर कहा बीरबल

अब तुम अकबर भारत न बनाव अब भारत बनाने में रानी साहिबा को चार ख़ाविन्द और करना पड़ेंगे तो ऐसा भारत हम नहीं बनवाना चाहते ॥

॥ सोलहवां लतीफा ॥

(बात की उलट पुलट)

एक वक्त अकबर बादशाह की मुलाक़ात को एक पंडित और एक फ़कीर यह दोनों आये दर्बार भरा हुआ था पंडित ने विभूति राजा साहिब को भेंटदी और कहा यह देवी की विभूति है यह आप की रक्षा करे और फ़कीर ने धने और सबज़ा भेंट में साम्हने रक्खे दर्बार में उस समय सब मुसलमान थे बादशाह से बोले हुज़ूर यह हिन्दू आप की बुराई विचारता है इसने गद्दी पर ख़ाक रक्खी है जिस का मतलब ये है कि बादशाह की गद्दी ख़ाक में मिल जाय और इस फ़कीर ने आप के रूबरू सबज़ा रक्खा है कि जिस का मतलब यह है कि हुज़ूर की गद्दी हमेशा सर सबज़ बनी रहे इस वास्ते इस हिन्दू को निकलवा देना चाहिये और फ़कीर को इनाम देना चाहिये बादशाह ने यह सुनकर उस पंडित को निकलवा दिया पंडित विचारा निराश होकर लौट गया रास्ते में इसे बीरबल मिल गये उन से इसने सब हाल कहा बीरबल बोले अच्छा तुम हमारे साथ फिर चलो ऐसा कह अपने साथ उस पंडित को लेकर बीरबल राज दर्बार में पहुंचे और अकबर बादशाह से बोले आप के यहां कुछ इन्साफ़ नहीं है ब्राम्हण इतनी उमदा चीज़ लाया और आपने उस को निकाल दिया राजा बोले वाह वह राख लाया था जिस से यह मतलब था कि हमारी गद्दी राख हो जाय बीरबल ने पूछा और फ़कीर क्या लाया था बादशाह ने कहा धने सबज़ा बीरबल बोले देखिये आप इस का कुछ मतलब नहीं समझे ब्राम्हण लाया था राख जिस का अर्थ हुआ कि जाने न पावे अर्थात् रक्षा हो अर्थात् ईश्वर आप का धन राखले और फ़कीर लाया धने और सबज़ा धने अर्थात् धन अर्थात् रुपया पैसा और सबज़ा अर्थात् कुछ न बचे जितना धन हो सब चला जाय सो वह मुस-

न ने तो आप की बुराई चाही और ब्राम्हण ने भलाई सो आपने निकलवा दिया बादशाह ने यह अर्थ सुन कर ब्राम्हण को खूबसा म देकर बिदा किया ॥

॥ सत्रहवां लतीफ़ा ॥

[अक़्ल]

एक वक्त एक बादशाह ने अपने वज़ीर की अक़्ल का इम्तहान ने के लिये यह जुमला लिखकर भेजा " दस्त बर सीनह निहादः फ़रोमंद " (अर्थ) हाथ ऊपर सीने के रखकर भेज दो वज़ीर बड़ा मन्द था उसने उस जुमले का मतलब ऐसा तरह समझा याने के माने हुए हाथ जिस की शुद्ध हिन्दी हुई कर और सीना की ती हुई छिया अब कर और छिया का जोड़ा तो हुआ करछिया कड़छी वज़ीर ने एक कड़छी ले कर बादशाह के पास भेज दी शाह निहायत खुश हुये और वजीर को बहुत सा इनाम दिया

॥ अठारवां लतीफ़ा ॥

(अक़्ल)

एक बादशाह ने अपने वज़ीर के पास यह जुमला लिख कर यह साफ़ कर कि इस को हिन्दी कर के हमारे दोस्त के पास ऐसे लिख के भेज दो जुमला " शिरी दिल के फ़िरस्तादा बूद कूचः ई खन्दक न शुद " वज़ीर ने बज़रिये अक़्ल के माने यों लिखकर बादशाह की खिदमत में हाजिर किये शिरीदिल=जामुन, के फ़िरस्ता-दा=जो भेजी थी, कूचा=गली, नबूद=न थी, खन्दक=खाई, न-शुद=न गई, जामुन जो भेजी थी गली न थी खाई न गई

॥ उन्नईसवां लतीफ़ा ॥

(नाम की खराबी)

तलमीज़ तहसीलदार साहिब की बदली एक गांव की लोग बिलकुल गंवार और बेवकूफ थे एक रोज़ कार

खियार है कि कुछ देहकानी मिल कर तहसीलदार साहेब सलाम को गये और सब मिलकर तहसीलदार साहेब से लगे "हुज़ूर आपन केर नाम का आही" तहसीलदार बोले नाम से तुम्हें कुछ वास्ता नहीं है और ? आप जान जावगे दह बोले "हुज़ूर बताय देंय" हुज़ूर तो हमरे मालिक आहीं हुज़ूर नाम तो जाना चाही तहसीलदार साहेब बोले हमारा नाम अली है दहकानी कहने लगे, सर्कार चिराग़ अली हूहें सरकार केर नाम मशाल अली का जानी के मसुर लरका नाम चिराग़अली रखाय दिहिस सरकार केर उज्यार मशाल अस है तहसीलदार साहेब बहुत नाराज़ हुए और चपरासियों से कि इन दहकानियों को निकाल दो साले फ़जूल गाली देते हैं नी बोले "हुज़ूर काहे बदे निकारत हैं हुज़ूर तो मालिक हुज़ूर तो हूं हैं कूकर और हम होव लड़ई हुज़ूर रगिदें भागव हुज़ूर काहे बदे निकारत हैं तहसील दार साहेब और गुस्सा हुये चपरासियों से बोले अजी इनको निकालो फिर भी देते हैं दहकानी बोले हुज़ूर गुसां होत हैं अरे हम तो मना कि हुज़ूर होंय गधहा और हम होई दूब हुज़ूर खांय और हरयाई तहसील दार साहेब ने बहुत गुस्सा होकर उन दहकानियों को निकलवा दिया ॥

॥ बीसवां लतीफ़ा ॥

(बीरबल)

एक समय अकबर बादशाह ने बीरबल से कहा और इस का जवाब दे "किहि कारण सुन्दर हांथ जरी" और जो न देवगे तो तुझे जानसे मरवा डालूंगा बीरबल ने फ़ौरन जवाब

॥ कवित्त ॥

गई अबला रस भेद न जानत सेज गई जिय मांह डरी
रस बात कही तब चौंक चली तब धाय के कांपने बांह भरी
इन दोहन के झकझोरनसों कटि नाभि पितांबर टूट परी
कर दीपक को मनोझांप दियो तिह कारण सुन्दर हांथजरी

बादशाह बीरल पर बड़े खुश हुये और बीरल को खूबसा इनाम दिये.

॥ इक्कीसवां लतीफा ॥

(शायर)

एक शायर साहेब बादशाह की महफ़िल में शेर तसनीफ कर रहे थे बादशाह ने इत्ताफ़न उन से फ़रमाया क्या झूठ बक रहे हो उन्हों ने अर्ज़ की कि हुज़ूर ही की तारीफ़ है.

॥बाइसवां लतीफा ॥

(कुच की तारीफ़)

रावण जब सीता जी को हर ले गया तब राक्षसियों ने उन्हें देखा और आपुस में कहने लगीं कि देखो ईश्वर ने हर एक अच्छी चीज़ में कलङ्क लगा दिया है गुलाब का पुष्प कितना सुन्दर है परन्तु उस में कांटे हैं ऐसे ही चन्द्रमा परन्तु वह घटता बढ़ता है केवल पूर्ण मासी को पूर्ण होता है सो उस दिन उसे राहु ग्रसता है इसी प्रकार सीता जी भी अति सुन्दर हैं परन्तु इनके पूंछ नहीं है पूंछ न होने से इन की सुन्दरता बिलकुल फीकी पड़ गई.

॥ तेइसवां लतीफा ॥

(शास्त्री जी)

एक शास्त्री जीकी तबीयत अच्छी न थी सो एक वैद्यराज के पास गये और दवा पूंछी वैद्यराज ने बताया कि शास्त्री जी आप कंटकारी का शर्बत पीजिये इतना सुन कर शास्त्री जी घर चले आए, और विचार ने लगे कंटकारी का शर्बत बताया है कंटकारी किसे कहते हैं सोचते २ बड़ी देर में विचारा कंटक नाम कांटे का और अरि नाम शत्रु का सो कांटे का शत्रु जूता ऐसा विचार कर शास्त्री जीने जूते को खूब रगड़ा और उस का शर्बत बनाकर पी गये दूसरे दिन वैद्यराज के पास गये वैद्यराज ने पूछा कहो शास्त्री जी तबीयत

[illegible] होगई [illegible] तो कहानी होगई [illegible]
८८ [illegible] ॥

॥ चौबीसवां [illegible] ॥

([illegible] बहादुर)

चार ठगों [illegible] अपनी बहिन को उसकी [illegible]
लिवाने लिये चले जाते थे रास्ते में उन से एक बुड्ढे ठग से मुलाकात
हुई और किसी बात पर चारों ठगों से झगड़ा हो और बुड्ढे ठग से
शर्त होगई कि अगर बुड्ढा ठग हार तो बीस हजार रुपया दे और
वह जीते तो इनकी बहिन लेले इत्तफ़ाक़ ऐसा हुआ कि बुड्ढा ठग
जीत गया जीतते ही फ़ौरन उस ने उन की बहिन का हाथ पकड़ा
और अपने घर ले चला अब वह चारों ठग बड़े घबड़ाये और आपुस
में यह सोचने लगे कि अब शर्त तो हार ही चुके हैं सो यह
अपनी बहिन को लिवाये लिये जाता है और जब अपना बाप
सुनेगा तो वह बड़ा नाराज़ होगा ऐसा सोच चारों उन चारों में से
बड़ा ठग जो सब से होशयार था बुड्ढे से बोला बाबा तुम बड़े हम
छोटे तुम जीते हम हारे अब हमारी बहिन हम को देदो बुड्ढा
बोला अच्छा भाई जो तुम आधीनता बताते हो तो जाव एक महीना
बाद हमारे घर पर आकर ले जाना ऐसा कह और अपने घर का
पता बता घर चला गया ये चारों ठग भी अपने घर चले गये इन के
बापने पूछा क्यों विदा करा लाये उस वक्त इन चारों ने बहाना कर
दिया कि एक महिना में रुखसत करने कहा है अब यह बुड्ढा ठग
उस औरत को लेकर अपने घर आया और ज्योंही उस औरत को
लाखों की मालियत बताई त्योंही वह खुश होगई जब बुड्ढे ने देखा
कि यह खुश है उस से बोला अब तुम यहीं रहो अब अपने भाइयों
के साथ मत जाना जैसी मैं अक्ल बताऊं वैसो करना औरत धन के
वश राज़ी होगई जब बीस दिन गुज़र चुके तब बुड्ढे ने सोचा कि अब
वे चारों ठग आवेंगे सो आने को रास्ता पर इस ने एक खेत लिया
और दो खरगोश पाले एक को घर के दरवाजे पर बांध दिया और
दूसरे को खेत में और अपनी औरत से कह दिया कि तुम कुछ दिन

गुस्सा तो आता है कि एक डंडा मारै सो मर जाय औरत बोली जब
ऐसो तब गाली दिया करत हो तुम्हें न, एक डंडा मारै सो मरजाय
बुड्ढे को मानो बड़ा गुस्सा आया डंडा लेकर और भीतर जाकर
मस्तक में चार पांच हाथ फटकारे औरत तो सदी बदी थी मक्कार बना
कर मुरदे के मुआफ़िक़ गिर पड़ी और मस्तक से खून की धार बह
चली चारों ठगों ने समझा कि इन ने हमारी बहिन को मार डाला
बहुत बिगड़ और कहने लगे चलो पुलिस में रपोट कर आवें जब रपोट
करने चले तब बुड्ढा बोला भाई रपोट न करो हम तुम्हारी बहिन
को जिलाये देते हैं ये बोले चला जा कहीं मरा आदमी जिया है
बुड्ढा बोला भाई मेरे पास ऐसी चीज़ है देखना अभी जिई उठती है
हाथ कंगन को आरसी काहे को ऐसा कहकर जो एक डंडा सुंघाया
सो वह सदी बदी औरत उठ बैठी और बोली भइया हमें बड़ा कष्ट है
जो बुढ़वा महीना पन्द्रह रोज में ऐसे मार डारत है और जो डंडा
सुंघा कर जिला लेत है तब चारों ठगों ने सोचा अपनी बहिन ऐसा
कहती है तो इस डंडा में बड़ी भारी तासीर है अपनी औरतें भी बड़ी
मक्कार हैं सो जिस तरह बने डंडा ले लो और दारियों को नसीहत
दो तलवार से सब के गले काट डालें फिर डंडा सुंघा कर सो जिला
लेवें करेंगे और तभी दारियों पर अपना रौब जमेगा ऐसा विचार
बड़ी खुशामद से यह डंडा लेकर अपने घर चले और बहिन इन की बुड्ढे
के पास फिर रही घर पहुंचते ही चारों ठग अपनी २ औरतों से खूब
लड़े और चारों ने तलवार से अपनी २ औरतों के गले काट डाले अब
लगे डंडा सुंघाने कि जो उठें लेकिन वह काहे को जीती हैं तब तो
थोड़ी मार २ कर रोने लगे और कहने लगे कि इस बुड्ढे का खाना
खराब हो इस ने अपन चारों को बड़े २ धोके दिये और सत्यानाश
कर डाला अब कुछ हो चल के साले का गला काट लेना चाहिये
ऐसा विचार करके चले यहां बुड्ढे ने भी सोचा कि अब की वे और
आवेंगे तो मुझे जीता न छोड़ेंगे इसने क्या काम किया कि अपनी
औरत से कहा कि जब तुम्हारे भाई आवें तब चिल्ला २ रोने लगना
और कहना भइया मो को बड़ो डर लगत है बुढ़वा तो मर गयो अब
कोई आदम न पांचे देखो नदिया में गहरे में फेंक आय मैं ने लाश
मसक में बांध धरी है और फेंक के आव सो अब धन हो चलो और

हमें ले चलो ऐसा सिखा कर बुड्ढा उस सन्दूक में बन्द हो गया अब यह चारों ठग आये सो उस औरत ने जैसी सिखाई गई थी वैसे कहा चारों ठग आपुस में बोले चलो भइया अच्छा मर गया मारना न पड़ा अब उठाव साले को नदी में फेंक आवें औरतें मर गईं सो मर गईं धन तो खूब मिला फिर शादियां कर लेवेंगे ऐसा कह कर सन्दूक जिस में बुड्ढा बैठे थे उठाई और नदी में फेंकने ले चले जब नदी के किनारे पहुंचे तब सब ने सलाह की कि गठरी तो रख दो पहिले चल के गहरी जगह ढूंढ आवें फिर ले चल के साले को फेंक देंगे सो यह गठरी रख कर गहरी जगह ढूंढने को गये जब बुड्ढे ने जाना कि वह दूर निकल गये तब सन्दूक में छेद किया तो क्या देखता है कि एक गडरिया बकरियां चराता चला आता है इस ने उस को बुलाया और उस से कहा भइया हमें इस में से निकाल दे गड़रिया बोला तुम्हें इस में किस ने बंद किया है बुड्ढा कहने लगा अरे भइया कुछ न पूछो हम हैं पांच भाई चार की शादी हो गई है और हम शादी नहीं करते हमारे ये चारों भाई ज़बरदस्ती हमारी शादी करने को हमें लिये जाते हैं अभी नदी गये हैं आवेंगे सो फिर हमें उठा के लाद के ले जांयगे सो हमें जल्दी निकाल दो जिस में वे आने न पावें गड़रिया बोला यार हमारी शादी नहीं हुई हमारी करा दो बुड्ढा बोला अच्छा मुझे निकाल दे मैं तुझे इस में बंद कर दूं जब शादी हो जावेगी तेरे साथ भांवर पड़ जावेगी तब तेरे से कौन छुड़ाये लेता है गड़रिया ने यह सुन कर झट उसे निकाल दिया बुड्ढे ने गड़रिया को तो सन्दूक में बन्द कर दिया और आप बकरीं हांकता हुआ घर आया और बकरियों को अलग २ खूंटों से बांध बैठ रहा वहां यह चारों ठग गहरी जगह ढूंढ कर आये और गरड़ दोज जी को उठा कर नदी में फेंक दिया अब चारों ठग बड़े खुश हुये कि साले को फेंक दिया अब अब चलो सो सब धन लें और अपनी बाम्हन को लिवा चलें ऐसी बातें करते हुये घर आये देखा तो बुड्ढे बाबा वहां बैठे हैं और बकरियां इर्द गिर्द बंधी हैं बड़े ताज्जुब में आये कि यह क्या मामला है कहने लगे क्यों बे बुड्ढा क्या भूत होकर यहां आगया बुड्ढा बोला अरे भइया मैं भूत नहीं हूं तुमने बड़ी गलती की जो मुझे उथले में फेंका इस नदी का यह प्रभाव है कि इस में मुर्दा डाल दो तो जी उठे और

घड़े में फेंको तो ऐसी चपातियां मिलें जैसी मुझे मिलीं गड्ढे में फेंको तो हाथी मिलें और गड्ढे में फेंको तो हीरा जवाहिर मिलें, और आदमी की उमर दूनी हो जाय अब मेरी उमर दूनी होगई है मैं इसलिये और जियूंगा चारों ठग बोले दादा जब नदिया में ऐसा प्रभाव है तो हमें भी फेंक आय अकेले बहुत गड्ढे में जो मैं हीरा जवाहिर मिलें, बुड्ढा बोला कि फेंकने को तो हम फेंक देंय, लेकिन हीरा जवाहिर जो मिलें आधे हम ले लेंयगे चारों ठग इस बात पर राजी हुए बुड्ढे ने चारों को गठरी में बांधकर नदी में फेंक दिया और बेफ़िक्र हो आराम से औरत के साथ घर में रहने लगा

॥ पचीसवां लतीफा ॥

(दोस्त की निशानी)

दो दोस्त जुदे होने लगे एक ने कहा कि यार कुछ निशानी दो जिस से तुम्हारी याद बनी रहे तो दूसरे दोस्त ने अपनी अंगूठी उतार के दे दी, अब उस ने कहा यार तुम भी अपनी निशानी दो वह बोला यही निशानी याद कर लिया करो कि मांगी थी दी नहीं

॥ छब्बीसवां लतीफा ॥

(हंस पद)

एक समय कालीदास अपने गुरु के पास एक पुस्तक पढ़ रहे थे उस में एक शब्द में एक अक्षर छपने को रह गया था सो ऊपर छाप दिया गया था कालीदास ने गुरु जी से पूछा गुरु जी यह अक्षर ऊपर क्यों लिखा है गुरु जी बोले यह हंस पद कहलाता है जब भूल हो जाती है तब अक्षर का हंस पद ऊपर आजाता है एक दिन कालीदास ने स्नान करके धोती न पहिनी धोती को लेके मूंड़ से बांध लिया और गुरु जी के पास चले आये गुरु जी ने कहा कालीदास आज यह कौन सा रूप बनाया है नंगा क्यों है धोती पहिननी चाहिये कि मूंड़ से बांधना चाहिये, कालीदास बोले गुरु जी भूल होगई थी सो धोती का हंस पद ऊपर हो गया गुरु जी हंसने लगे और बोले केवल लिखने में हंस पद होता है सब बातों में नहीं

॥ सत्ताईसवां लतीफा ॥

(शराबी)

एक शराबी एक दिन रात को खूब शराब पिये नशे में चूर घर चले आते थे रास्ता गये भूल दूसरे के मकान को अपना मकान समझ उस के घर में घुस गये परछो में पहुंचते ही चक्कर आया था गिर पड़े वहां एक कुतिया पड़ी सोती थी शराबी ने जाना कि हमारी औरत पड़ी है विचारा कि पास जाके प्यार करें ऐसा विचार उस के पास गया और —

पकड़ पूंछ जल्दी से पूंछन वे लागे, चुटिया आग गुन्थायी है।
शीघ्र पकड़ के ताने पूंछे, झुम के वाहां गसायो है॥
काहे पड़ी धूर में लोटत, मन का नांय बिछायो है।
हाथ गरे में डारो कुतिया, भों भों शब्द मचायो है॥

तब तो आप बड़े नाराज़ हुये बोले औरतें किसी की नहीं होती हम तो इतने प्रेमसे बोल रहे हैं और आप कुत्ता सी भौंकती हैं इतना कहके वहीं सोरहे कुतिया भाग गई बाद थोड़ी देर के वह कुतिया फिर वहां आई और इन के मुंह में मूतने लगी पानी पड़ने से इनकी नींद खुल गई सो इन ने क्या जाना कि कोई शराब पिलाता है बोल उठे बस किबला बस अब माफ़ कीजिये खूब पी चुका आप की इतनी मिहरबानी क्या थोड़ी है

॥ अठाइसवां लतीफ़ा ॥

(हिन्दी की उलट पुलट)

एक समय श्री कृष्ण जी राधिका जी के पास गये और सखियों के द्वारा श्री राधिका जी के पास निज आगमन का सन्देसा भेजा एक सखीने जाकर राधिका जी से कहा —

सखी — पोर में आये खड़े हरि हैं (हरि हैं अर्थात् श्री कृष्ण चन्द्र जी हैं को राधिका जी ने हरि हैं अर्थात् चोरीकर हैं ऐसा समझ को जवाब दिया)

राधिका — वन है न कछू हरि है तो हरें वे

सखी — करबे को हैं काहू बिलो (घड़ा बिलो को राधिका जी ने बिन तीय अर्थात् बिना ब्याहा ऐसा अर्थ लगाकर जवाब दिया)

राधिका — बिन तिय हैं तो तिय कोज करें वे ॥

सखि—पूछत हैं कछू बात को भेद. [यहाँ राधिका जी ने बात शब्द का अर्थ रोग ठहराया है जो वायते हैं बात पित्त कफ और जवाब दिया]

राधिका—बुलाये हैं वेद जरा ठहरें वे ॥

सखि—देवे को लाये हैं माल तुम्हें [माल = सौगात]

राधिका—वर माल लिए अपने पहिरें वे ॥

॥ पूर्ण सवैया ॥

जोर से आए खड़े हरि हैं,— अब है न कछू डर हैं तो डरें वे
करवे को हैं कछू विनती,— बिनतीय हैं तो तिय कोज करें वे
पूछत हैं कछू बात को भेद — बुलाए हैं वेद जरा ठहरें वे
देवे को लाए हैं माल तुम्हें — वर माल लिए अपनी पहिरें वे

॥उन्तीसवां लतीफा ॥

(बीरबल)

एक वक्त बीरबल बादशाह के पास गये बादशाह ने धीरे से फौरन जिससे सुन ले दिल्लगी में नौकरों से कहा बीरन को पांच पैजार इनाम में देना बीरबल चलने लगे तब नौकरों ने कहा आप. बीरबल आज बादशाह के हुकुमके माफिक तुम्हे पैजार इनाम में मिलेंगे बीरबल समझ गये कि यह सब बादशाह का कहलवाया है फौरन बादशाह से बोले देखिये हुजूर आप के नोकर आप के मुंह पर पैजार मारने चाहते हैं बादशाह वज़ीर की इस जुमानी हाजिर जवाबी पर बहुत खुश हुए ॥

॥ तीसवां लतीफा ॥

(मक्कार औरत)

एक शख्स की औरत बड़ी मक्कार थी उस का ख़ाविन्द बहुत अच्छा आदमी था हमेशा खैरात किया करता था और अक्सर गरीबों को घर लाकर खिलाया पिलाया करताथा औरतजो बड़ीकंजूस और मक्कार थी वह हमेशा इस बात पर नाराज़ हुआ करती थी

३८५

और चाहती थी कि खुवाविन्द उस को कंजूसी से रहा करे एक दिन वह शख्स एक भूखे आदमी को घर ले आया और उस आदमी के खाने पीने का सब सामान कर दिया और घी खरीदने को को बाज़ार चला गया अपनी औरत से कह गया कि जो चीज़ यह मांगे सो देना मैं घी लेके अभी आता हूं जब वह शख्स घी लेने चला गया तब इस औरत ने विचारा कि किसी न किसी तरह इस आदमी को भगाना चाहिये ऐसा विचार कर उस आदमी के पास गई और उस से बोली क्यों भाई क्या तुम घर में अकेले हो वह बोला मैं अकेला क्यों, हां मेरी औरत है लड़के वाले सब हैं फिर वह औरत बोली क्या तुम्हें अपनी जान से दुश्मनी है वह बोला जान तो अपनी २ सभी को प्यारी होती है यह पूछने से तेरा मतलब क्या है औरत बोली मुझे तुम्हारी जान पर रहम आता है इस से बतलाती हूं कि अगर तुम्हें जान प्यारी है तो यहां से भाग जाव हमारे खुवाविन्द का यह कायदा है कि वह रोज़ एक आध परदेशी को ढूंड़ लाते हैं और मूसलों से मार २ के उस की जान ले डालते हैं और जो कुछ पास में होता है सो छुड़ा लेते हैं अब वे बाज़ार घी लेने गये हैं सो आते ही होंगे घी तुम्हारे बदन में लगाके ऊपर से मूसरों को मार देवेंगे, ज्योंही उस आदमी ने यह हाल सुना त्योंही फौरन असला बसला डाल वहां से भागा थोड़ी देर में उस औरत का खुवाविन्द आया और औरत से पूछने लगा क्यों री वह आदमी कहां गया वह बोली वह तो नाराज़ होके चला गया, मुझ से कहता था कि मुझे मूसर देदे मैंने मूसर नहीं दिया सो वह नाराज़ होके चला गया वह शख्स बोला तूने नाहक हमारे मेहमान को नाराज़ किया मूसर क्या बड़ी चीज़ थी दे दिया होता खैर कहां है वह मूसर मैं उसे दे आऊं किस तरफ़ को गया है औरत ने मूसर उठा के उन के हवाले किया और जिस रास्ते वह परदेशी गया था वह वह रास्ता भी बतला दी यह विचारा मूसर लेके उसी रास्ता गया देखता क्या है कि वह परदेशी भगा चला जा रहा है देखते ही इसने आवाज़ दी अरे भाई क्यों भागा जाता है ले मैं तेरे वास्ते मूसल लाया हूं ज्यों ही उस परदेशी ने फिर कर देखा कि वह मूसल लिये चला आता है त्योंही उसकी जान सूख गई विचार ने लगा कि औरत ने सच कहा था इस ने यहां तक मुझे न छोड़ा अब

रो जान ले लेगा ऐसा विचार और ज़ोर से भागा और चिल्ला
र आदमी से कहने लगा जाव मूसल लेके घर जाव आज परमे-
र मेरी जान बचाई अब मैं तुम्हारे फन्दे में न आऊंगा ॥

॥ इकतीसवां लतीफा ॥

(रतौंधी)

एक आदमी को रतौंधी आती थी इसी हालत में उसे सस-
राले का काम पड़ा रात को दावत थी वह भी खाना खाने को
दिखता तो कुछ था ही नहीं इन को ससुराल में एक हिरनी
थी और उस के गले में घंटा बंधा था सो चलने में उस घंटे की
ज़ होती थी वह हिरनी छूट गई और भाग कर इन को धक्का
र मारकर भागी इन को तो यह नज़र न पड़ी और लोगों ने
खा इन से मसखरापन करने लगे इन के दिल में बड़ी शरम
और विचारा कि अब की दफ़े आवेगी तो घुंघरू की आवाज़
चान उस को मारूंगा इस विचार में थे ही कि उन की सास
ने आई सास के पाजेब की जो आवाज़ आई तो इसी विचारा कि
ही फिर आती है घुंघरू की आवाज़ होने लगी इतने में सास ने
ने को हाथ पानी पर दौड़ाया यह समझे हिरनी मुझे मारती है
इन्हों ने हाथ बढ़ा के सास को ज़ोर से एक तमाचा मारा और
के हरामज़ादी घड़ी २ मुझे डालने को आती है ॥

॥ बत्तीसवां लतीफा ॥

(हिजड़े)

कुछ हिजड़े जंगल में जा रहे थे वहां उन्हें चोर मिले चोरों
ने देखकर हिजड़े उन से बोले हैं यारो आओ क्या हम लोगों को भी
टोगे हम लोग तो हिजड़े हैं चोर बोले हिजड़े और ना मर्द तो
हमारे चंगल में फसते ही हैं मर्द काहे को फसेंगे ॥

प्रभाती

जै जै श्री जमुना कालिन्द नंदनी ॥ गुल्म लता तरु सुवास कुंज कुसुम मोदमत्त गुंजत अलि शुभग सुलिन वायु संदिनी ॥ हरि समान धर्म धीर कांति संजुल जलद नील, कटि नितंब भेदत नित गति उतंगनी ॥ निर्मल जनु मुक्ता फल कंकण जुत भुज तरंग कमलन उपहार लेत पिय चरण वन्दनी ॥ श्री गोपेन्द्र गोपी संग रास जल कमल लिये रंग अति तरंगणी जुर सिक रस सुफंदनी ॥ कीत स्वामी गिरवर धर नंदनन्दन आनन्द कन्द जमुने जन दुरित हरन दुख निकंदनी ॥

प्रभाती

घूमत रतनारे नयन सकल निशा जागी ॥ लटपटी सुदेश पाग अलकन की भावत बोष पोक छाय जुग कपोल अधरनि मसि लागी । विन गुण लाल वनी वीच नखन रेख ठनो पगट धरे वसन पीठ कंकन से दागे ॥ चाक बन्यो चंदन वन लाल लग्यो चंदन सो डग लगाये धरत धरत प्रिया प्रेम पागी ॥ वचन रचन कियो सांझ वेग आए भोर सांझ बलि बल या वदन कामज शोभित अनुरागी ॥ जाय वसो वाही श्याम विलसे जहां सकल जाम गोविन्द प्रभु बलहारी वार जोरे मांगी

प्रभाती

मोह्यो मन आज श्याम बांसुरी की तान सें ॥ चित की बाधी धीर चित्त को नशायो धीर दूढ़ी चल जमुन तीर कुंजन लतान सें ॥ वेग ही अब सिलहु कान्ह दुख वियोग को महान छाय सदै प्राण सुख न खान पान में ॥ या विध सब सखि अधीर ढूंढ्यो जमुन तीर हूढ़ करी सब घोर छाय एक आन में ॥ सुर नर मुनि ध्यान धरत राधे श्याम श्याम रटत शैल जदवीर रहत चरनन ध्यान में ॥

प्रभाती

जय जय रघुकुल दिनेश कौशिला बिहारी ॥ सोहत कर धनु तीर लक्ष्मण बीर संग घोर सरयु तीर सखिन ओर संग लै शिकारी मंद चलनि चलन हलनि कुंडल की डुलन खूब वार २ सखिन लिये

ने मोद कारी ॥ बिहरत काहुं कुंज कुंज जहां भंवर पुंज गुंज फूले रंज मंजु सुमन चोर चारी ॥ गहे एक हाथ लपण लाल कोर सोभ त नवल नृपति लाल दीन के दयाल भारी ॥ काहूं चटक चलैं काहूं हंस मुन हरहैं फेर लोचन को फल दान ललित लीला मन हारी॥ । दीप चाह चाह चितै चितै थक न पावै रघुराज मोद चाव चौंर ते ॥

प्रभाती

राम भजन बिन फीको जीवन राम भजन बिन फीको ॥ जिन हैं नाम राम को लीन्हों जग नहिं जीवत नीको ॥ माया रूपी विष में पटे धारन करत धर्म को ॥ चार दिना को जग में जीनो कौन ऐसा तो को ॥ कै एक कहत प्रभु यह नाशो चमत्कार सोहो को ॥ दासन को दास तिहारो जानत हो तुमहीं को ॥

लावनी

पवि करत वृथा सब लोग जोग गिरधारी ॥ सांचो जोगिन पिय बिना वियोगिन नारी ॥ विरहागिन धूनी चारों ओर लगाई ॥ ॥ धुनको मुद्रा कानों पहिराई ॥ अंसुअन की सेली गलमें लगत हाई ॥ तन धूर जमी सोई अंग भभूत रमाई ॥ लट उलझ रही सोई काई सदकारी ॥ सांचो जोगिन पिय बिना वियोगिन नारी ॥ १ ॥ ए विरह दियो उपदेश सुनो ब्रज बाला ॥ पिय बिछुरन दुख कार लाग्यो रंग काला ॥ मन की मनकी को जपो पिया की माला ॥ रधन दो तोड़े सभी निरालो चाला ॥ प्रीतम से लगो लौं चपल माथ न तारी ॥ सांचो जोगिन पिय बिना वियोगिन नारी ॥ २ ॥ द है सुहाग का ध्यान हमारे बाना ॥ असगुन को सूरत ध्याक न भो चढ़ाना ॥ सिर सेंदुर देकर चोटी गुथ बनाना ॥ करि चूरी सुख रंग तमोल जमाना ॥ पीना प्याला प्रेम रखना यही खुमारी ॥ सांचो जोगिन पिय बिना वियोगिन नारी ॥ ३ ॥ है पंथ हमारा नैनों के मन ाना ॥ कुल शोक वेद सब औ परलोक मिटाना ॥ शिव जी से जोगो भी जोग सिखाना ॥ हरिचन्द एक प्यारे से नेह बढ़ाना ॥ ऐसे

वियोग पर पाख जोग वलहारो ॥ साधो जोगिन पिय विना वियोगिन नारो ॥ ४ ॥

राग मलार

विछरन जिन काहू सों होय ॥ बिछरन भयो राम सीता को क्रम चित खोजो तोय ॥ बिछरन भयो मीन अरु जल को तलफ २ तन खोय ॥ बिछरन भयो चकई चकवा को रैन गमाई रोय ॥ रुदन करत वैठी बन मद्धियां बात न बूझे कोय ॥ सूरदास स्वामी को बिछरन मनत उपाय न होय ॥

राग मलार

घटा मधुबन पर बरसो जाय ॥ हरि घनश्याम बिना सब बिरहन वेल गई कुम्हलाय ॥ उग्र तेज मम भानु तपत अति व्याकुल मन अकुलाय ॥ करहि कहा उपचार सखीरो नेकु न तपति बुझाय ॥ जब २ सुरत होत उर अन्तर तबहि उठत तन ताय ॥ सुमर २ गुण श्याम राम के रहो सूर मुरझाय ॥

राग परज

ऊधो काहे को भगत कहावत ॥ जो पै जोग लिख पठयो हम को तुम हु न भस्म चढ़ावत ॥ सिंगी मुद्रा भस्म अधारी हमहिं को कहा सिखावत ॥ कुबजा अधिक श्याम की प्यारी ताह नहीं पहिरावत ॥ यह तो हमको तबही न सिखयो जबतें गाय चरावत ॥ सूरदास प्रभु को कहियो अब लिख २ कहा पठावत ॥

दादरा

दूलहि देखो विदेह सुता को ॥ पूरण पुण्य उदै नैना को ॥ इनहिं देख पुन देखन को रुच मिथलापुर रहि है अब कावो ॥ लोचन लाभ लूटले सजनो जनम धरे को फल वसुधा को ॥ श्री रघुराज आज चुको जिन कहले सकल मोज मनसा को ॥

दादरा

लचक लगी लुकि बदन नयन को ॥ पायल धाज तुरंग भम-रत सगत सवारो संग सखन को ॥ जनेयो नगर मह डगर डगर व-कइर करत बहु तकनि पखन को ॥ श्री रघुराज लखे न लखे ई देउ विध डर कुल कानि रखन को ॥

मलार

सुनरी सयानी पिय इसबे को नैम लियो पावस दिनन कोई हो है करतरी ॥ दिस दिस घटा उठो मिलरी पिया सों क्यो निडर भयो है तेरी नेक न डरतरी ॥ सब येरो मेरो प्यारो मोको मान देन तेरी मान हूं ते प्यारी चित्त धीर न धरतरी ॥ सूरदास प्रभु तोहे दियो मोहिं हित चित इति क्यों न मिले तेरो नैम टरतरी ॥

ठुमरी

मेरो विजियों सजन नहिं ले गो घाज ॥ पिया बारी उमर मोहे घावे लाज ॥ नैया पिया तुम मानत नाहीं कैसे बे दरदी से पड़ो है काज ॥

ठुमरी

घब तो करत घरज गरज समुझ पिया मान मोरी मोहे कल ना परत है ॥ कादर पिया कछु बस नहिं मेरो लाज गई वा तो काहु को चोरो—मोहे कल ना परत है ॥

ठुमरी

तुम जीते मैं हारी—पनीहे सैयां तुम जीते मैं हारी ॥ बदियां गइत तुर्हें लाज न घावत लोग हंसे दै दै तारी ॥ पनीहे ॥ जोन देत मोहन देर भई मोहे मात ननद देहैं गारी ॥ के पल पिय घब नेह कीनो है तो फिर लाज कहां री ॥

मलार

पपिन शिखर चढ़ टेर सुनायो ॥ विरहन सावधान है रहियो घन पावस दल घायो ॥ बादर घति दामिन पवन भयो गाजी चढ़ घति

चटक दिखायो ॥ दामिन सैल समान घटायन गरज निशान बजायो ॥ चातक पिक सुक संग झिंगरी सबहिन मारू गायो ॥ मदन सुभट ले पंच बान कर बन सन्मुख ह्वै धायो ॥ जान विदेश नन्द नन्दन को अवसर त्रास दिखायो ॥ सूर श्याम पदली सुख सुमरत जात प्राण बिरमायो ॥

मल्लार

"सखी ये नैना बहुत बुरे ॥ तब सों भए पराए, हरि सों जब सों जाय जुरे ॥ मोहन के रस बस ह्वै डोलत तलफत तनक दुरे ॥ मेरी सीख प्रीति सब छांड़ी ऐसे ये निगुरे ॥ जग खोयो बरजो पर ये नहीं हठ सों तनक मुरे ॥ अमृत भरे देखत कमलन से विष के बुते छुरे"

"छिपाए छिपत न नैन लगे ॥ उघर परत सब जानत जात हैं घूंघट में न खगे ॥ कितनो करो दुराव दुरत नहीं जब ये प्रेम पगे ॥ निडर भए उघरे से डोलत मोहन रंग रंगे"

ठुमरी

काहू कौन बिथा मैं सखी मन की मेरे प्यारे पिय घर आए नहीं ॥ घन आये चहूं दिश धूम घने घन श्याम संदेस पठाए नहीं ॥ मुरवा पिक पापी शोर करें झिल्ली गन दादुर जोर करें ॥ पपिहा पिया २ चहुं ओर करें सजनी हमरें मन भाए नहीं ॥ पुरवैया बहै झकझोरन सों चपला चमके चहुं ओरन सों ॥ हम व्याकुल नैन सरोरुहन सों दुख काहु से जात सुनाए नहीं ॥ रघुनाथ कहें वृषभानु लली काहू सौतनियां बिलमाय छली ॥ वा देस न बादर छांय अली वहां पावस जोर जनाए नहीं ॥

॥ कवित्त ॥

छूट २ परे आज बेंदी भाल पैते सुख मेरे मोतिन की लरी सरकत है ॥ चूनह को कौन डग भरत निकस जात जब तब जूरह को गांठ सरकत है ॥ जान न परत परदेश पिय प्रेहलाद निकस उरोजन ते आंगी अरकत है ॥ तनी तरकत बार चूरी करकात सिर सारी सरकत आंख बाईं फरकत है ॥

कवित्त

धाड़ो ना रहत सोम ठाड़ो ही रहत सदा पच्छिम को पवन पाय पाला सो पटत है ॥ कम्पत करेजे धीज भीज्यो सुखद कहां गब्बर गरीब को गरूरता घटत है ॥ कहें कवि भवन पौन पान को परत सीत, २ तन पोर नीर नाही निपटत है ॥ पोढ़िये दुशाला करे लोयदा विशाला बिना लागि अंग बाला सीत पाला नहीं घटत है ॥

कवित्त

जाके ओर ताके,ताकि जाके हैं जहांके बीच जगके पताके छोर छाजत छमाले हैं ॥ धाकर सुधा के बसुधा के वेदना के छवि छिन्न छील ताके भार बिस के कजाके हैं ॥ आनन दयाके घन्नांन कास नाकि कोप जाकि भाल ताके मथरा के नैन पाके हैं ॥ सारे भूप जाके रूप वाके सुखमा के ऐन चचल चलाके नैन राम ही सलाके हैं ॥

कवित्त

दधी के दनी दो गुण गाहक अमी के छोक आनन दधी के लोके,औके औ निधी के हैं ॥ हंस गामिनी के वर कामनी के कली के अली के कौमदी के चोर मटकी के हैं ॥ सुंदर बनी के श्री धनी के निरंमी के रूप कागरी के चारदो के दारनी के टीके हैं ॥ हीके हार को विध सुधीके लीके टीके पर वाक कर भेन मैन नीके जान की के हैं ॥

होली

बांसुरी बन बाज रही री ॥ सेष महेश वृम्हादिक सारद नारद मोह रहीरी ॥ बालक बच्छ छोर नहिं पीवें तृणन चुगत मृग धेनु धार जमुना न बही री ॥ सुन धुन साध समाज डिगो नभ मंडल चचल भयोरी ॥ जो मुरली निस दिन बाजत तो री बसुरी यह नांह नहीं घर श्याम लई री ॥ जो गत भई सकल बृज बनता सो गति जात भई री ॥ दध बेचन को जात गुआलिन रटत गुपाल गुपाल बिसर गयो नाम दही री ॥ अपनो-अपनो काम छोड़ के प्रेम प्रवाह बहोरी ॥ सूर

श्याम अब घर जिय चाहत कर दीजै तन त्याग प्राण दो छपाव सहूँरी ॥

होली

श्याम से कोई जाय सुनाए ॥ फागुन मास नगचायोरी आली पिय अबहूं नहिं आए ॥ होरी से जियरा यों जरेरी कबहूं नहीं कल पाए ॥ पिया सौतिन बिलमाए ॥ का तकसीर भई मोरी मोहन जा कुबजा घर छाए ॥ कुबजहि भोग वियोग भयो मोहे अपने भये हैं पराए ॥ बात नहिं बनत बनाए ॥ प्रीत करे नहिं भूल सखीरी जिन कीन्हीं पछताए ॥ प्रीत करके श्याम से कीन्ही नैनन नीर बहाए ॥ हमहूं बिन मोल बिकाए ॥ गोहत राह चाह सें निसदिन चरनन चित्त लगाए ॥ के रुच वाको मैं दास बनूंगी जो कोई पियको मिलाए ॥ जतन मिलवे को बताए ॥

होली

दुलहन मांग सवारत सारी ॥ पिय के मिलन को आज तयारी ॥ भेज दिये नहियार पियाने मात पिता को बहुत दुलारी ॥ बेगी कहार बुलाओ सखीरी आज किई पिय याद हमारी ॥ कर सिंगार बनो बन बैठो भूल गई सब सुध बुध सारी ॥ नैहरवा मोहे नीको न लागे मोहे लगी ससुराल पियारी ॥ गुण औ गुण ले चलीरी पिया के माफ करो तकसीर हमारी ॥ बांह गहे की है लाज तुमहि को जान परो चरण शरण तुम्हारी ॥ पिया मिलें तो होवे गुज़ारा पलक २ छिन मैं पर भारी ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो ऐसे पिया को मैं बल हारी ॥

होली

सैयां से मोरी नेहु लगोरी ॥ पिय बिन फाग आग सी लागे जियरा जात जरो री ॥ मदन सरीर मरोर मरोरे दुख नहिं जात सहो री ॥ कहत मैं कैसी करों री ॥ काम कमान बान कर लैके निश दिन रहत खड़ो री ॥ पिया बिना मोहे कौन बचावे यह बलवान बड़ो री ॥ जान अबला मोहे मोरी ॥ आपुन जाय संग सखियन के रास करत निश भोरी ॥ हम को लिखत जोग की पतियां ऐसो निठुर भयो री ॥

राग सारंग

हरि बिन या बिधि हैं बृज रहियत ॥ पर पीरक सुनयत है ऊधो ताते तुम से कहियत ॥ चन्दन चन्द पवन पावक सम मिल मिल ह्वै तन दहियत ॥ जागत जात जात जुग जुग सम जतनन हो निबहयत ॥ बिरह सिन्धु जदुनाथ स्याम तनु कोउ पार न पइयत ॥ फिर फिर आस अधार गहत हैं बूड़त तन ज्यों गहियत ॥ ये सब आस दरसन को ऊधो ता मन हैं मन सहियत ॥ तन मन वचन सपथ है साँच और कछु नहिं चहियत ॥

दादरा

देखो भली छवि नयन लला की ॥ गोरे बदन तिलक केसर युत गोल कपोलन अलक छला की ॥ तिरछी तकन हसन मुरि मुख की चलन गरूर गयन्द कला की ॥ श्री रघुराज निरख मोहत नहीं। ऐसी कौन नार अबला की ॥

गौरी

हे बृज राज आज कहाँ अटके ॥ खेंचत बसन दुसासन कर सों मैं शरण अब नागर नट के ॥ होउ प्रगट बीच सभा में जानि हो बासो घट २ के ॥ जे है आज लाज यदुनन्दन रहे न लेस छुटे कटि पट के ॥ फिर माधो रह के पछतैहो देखहु केश छुटे लटके। जबहिं गोविन्द पुकार नार जब सुनत आड़ि बचन दुहू बार खटके ॥ अंबर बसन खुलत नहिं पायो हारि भुजा दुसासन सटके ॥

ग़ज़ल

जीना हमें इसका नज़र अपना नहीं आता। गर आज भी वह रश्के मसीहा नहीं आता ॥ मंज़ूर तेरे वस्ल से किस का नहीं आता। पर ज़िक्र हमारा नहीं आता नहीं आता ॥ देता दिले मुज़्तर को तेरे कुछ तो निशानी। पर ख़त भी तेरे हाथ का लिक्खा नहीं आता ॥ क्या जाने उसे वेहम है क्या मेरी तरफ़ से। जो ख़्वाब में भी रात को तनहा नहीं आता ॥ आया है दम आंखों में दमें हसरते दीदार। पर लब पे कभी हर्फ़ तमन्ना नहीं आता ॥ किस दम नहीं

होता हमको हिज्र है मुश्किल। जिस वक्त मेरा मुंह को कलेजा नहीं आता ॥ मैं जाता जहां से हूं तू आता नहीं यहां तक। काफिर तुम्हें कुछ खौफ खुदा का नहीं आता ॥ हम रोने पे आजावें तो दरिया ही बहावें। अब नम की तरह से हमें रोना नहीं आता ॥ हस्ती से ज़ियादा है कुछ आराम अदम में। जो जाता है यहां से वह दुबारा नहीं आता ॥ आना है तो आजा कोई दमको ही है फ़ुरसत। फिर देखिये आता भी है दम या नहीं आता ॥ गाफ़िल है बहारें चमने दहर जवानो। फिर सैर के मौसम यह दुबारा नहीं आता ॥ दुनिया है वह सैयाद के सब दाम में उसके। आजाते हैं लेकिन कोई दाना नहीं आता ॥ दिल मांगते हैं मुफ़्त को यह उस पे तक़ाज़ा। कुछ कर्ज़ तो बन्दे पे तुम्हारा नहीं आता ॥ वेसा है दिया उसके न आने की शिकायत। क्या कीजिये फ़रमाइये अच्छा नहीं आता ॥ जाती रहे दुनियां की खटक दिल से हमारे। अफ़सोस कुछ ऐसा हमें खटका नहीं आता ॥ जो कूचए क़ातिल में गया फिर वह न आया। क्या जाने मज़ा क्या है कि जीता नहीं आता ॥ क़िस्मत ही से लाचार हूं ऐ ज़ौक़ वगर ना। सब फ़न में हूं मैं ताक मुझे क्या नहीं आता ॥

गज़ल

तेरा वस्ल भी मुश्किल है दिल यही है। मुहब्बत का उलफ़त का हासिल यही है ॥ तेरी तेग़ देखी तो बिस्मिल यह बोला। गले से लगाने के क़ाबिल यही है ॥ उसे देखकर मुझ से कहता है यह दिल। मैं बिस्मिल हूं जिस का वह क़ातिल यही है ॥ जो कहते हैं मुंह देखकर आइने में। अगर है तो मेरा मुक़ाबिल यही है ॥ मुहिताब फ़ुरक़त में मरदूं पै देखा। मैं समझा के शमशीर क़ातिल यही है ॥ जनाज़ा मेरा जब चले कह पुकारा। कज़ा ने कहा पहिली मंज़िल यही है ॥ कोई गुंचा देखा जो गुलशन में मफ़्दर। तो समझा के मानिंद मेरा दिल यही है ॥

गज़ल

तीर निगाहों से किया तूने जो घायल मुझ को। नीम बिस्मिल न तू अब छोड़ सा क़ातिल मुझ को। क्या सताने में मज़ा है तुझे ऐ दिल मुझको। तेरे इस ज़ुल्म से जीना भी है मुश्किल

किसी रोज़। अरमान यही रह गया दिलदार से अफ़सोस॥ ये दर्द किसी शख़्स को अल्लाह न देवे। करते हैं यही सब तेरे बीमार से अफ़सोस॥ आशिक़ पे अमर कुछ न दुआ है न दवा है। बचता नहीं कोई इश्क़ के आज़ार से अफ़सोस॥ कहता था इसे नक़्शक़दम एक यार के दर पर। करते थे सब उस पर दरो दीवार से अफ़सोस॥ दरजा न शहादत का मिला जान गई मुफ़्त। क़ातिल ने न मारा मुझे तलवार से अफ़सोस॥ बस दार सितम ऐ बन्दः ख़ुदा से तू ज़रा डर। यह हर्फ़ कहे कौन सितमगार से अफ़सोस॥ अब उसने यह आईन निकाले हैं निराले। ग़म कहने न पावे कोई ग़मख़्वार से अफ़सोस॥ क्या मुफ़्त दिया हमने तुराब उसको दिल अपना। कोमल भी किये कुछ न ख़रीददार से अफ़सोस॥

ग़ज़ल

कुल्फ़त से कोशियों शाने को न ज़िन्हार जुदा। काट खाता है जो होता है सरे मार जुदा॥ आंख वे लुत्फ़ हैं पलकें हों जो ऐ यार जुदा। जिस तरह आबलः पा से करे ख़ार जुदा॥ दिल को मुफ़्त करेगा मज़ूर ख़बरदार जुदा। भज़ी से भज़ी को कर देती है तलवार जुदा॥ लूं जो बोसा न लबों से हों लवे यार जुदा। है वह बुलबुल हो जो गुल से हो मिनक़ार जुदा॥ सरे उश्शाक़ यहां बिकते हैं माशूक़ वहां। कूए क़ातिल है जुदा मिस्र का बाज़ार जुदा॥ आदमी आदमी है और है हैवां हैवां। तेरी रफ़्तार जुदा कबक की रफ़्तार जुदा॥ लाखों ने काट के सर रख दिये क़ातिल के हुज़ूर। उंगलियां हो गई यूसुफ़ पे जो दो चार जुदा॥ तेग़ अबरू है जो बेकस्ता करे खूं रेज़ी। वरनः मुश्किल है जो क़ब्ज़े से हो तलवार जुदा॥ क्या ही दिलचस्प है वल्लाह बदन उस बुत का। जिससे रग होते नहीं जिल्द [illegible] जुदा॥ हम बग़ल होते होमें जब वो बदन बन जाऊं। न तने यार से हो मेरा तने ज़ार जुदा॥ ऐश है आरियत इस बाग़ में और रंज मुदाम। क्या हो गुलबन से भला गुल की रविश ख़ार जुदा॥ सरो सामां ये है क्या किन के ग़ाफ़िल एक दिन। जिस्म से सर है जहां सर से है दस्तार जुदा॥ बोझ अपना न किसी पर कभी डाला मैंने। हूं है तामीर मेरी मिस्ल से दीवार जुदा॥ सब्ज़ाए ख़त से हुए तेरे [illegible] के पोश। करती है हासियों को जदवले जंगार जुदा॥

दिया चाहिये जिस वक्त मुयस्सर हो विसाल । काम में रखते हो फिर न हों गम ख्वार जुदा ॥ जिससे नाकूस बने आम फिग़ां करते हैं । सुद से करता है जो वह काफ़िरे में ज़ुन्नार जुदा ॥ गुल जाते हैं तो कहते हैं बगें गुलशन । हम तेरे दस्तों से क्यों कर न हों दार जुदा ॥ राहत गो कौन है ऐसा के गया ने न हो फ़र्क । असप तरह मेरा सर हो जो सौ बार जुदा ॥ फ़स्ल क्योंकर करूं देखीं नज़ारा नासिख़ । के सुरमाद से नहीं पैदे क़रार जुदा ॥

ग़ज़ल

कमरे यार से खिंच कर हुई तलवार जुदा । बेगुनाहों से रहे हैं गुनहगार जुदा ॥ मरज़े इश्क़ भी है और यह आज़ार जुदा । ठकर ऐसा मैं होता हूं मैं बीमार जुदा ॥ मोल लेकर हमें हम अपने से को काटें । कोई क़ातिल करे अबरू को जो तलवार जुदा ॥ नहीं फ़गार है पासबां से निराली उस की । तर्ज़ रफ़्तार अलग बन्दिशे गुफ़्तार जुदा ॥ हाथ गरदन में जो डालूं तो यह कहता है वह शोख़ । रख हमसा के गले से रहे ये हार जुदा ॥ हक़ीक़तवाला ने जो चाहा तो रख़ मेरा सनम । ज़ुल्फ़ से पेंच तेरे छट पटी दस्तार जुदा ॥ शोख़ियों से होवेंगे निफ़ाक पंगेशो । चार अन्सर को करेगो ये तपे हार जुदा ॥ तंग करतो है क़िबा तुझको निहायत ऐ गुल । बन्द बन्द इसे करेगा यह गुनहगार जुदा ॥ हाल दिल कहने से कटतो है ज़बां शमअ की तरह । अब से नह कोजो न इस बज़्म से ग़िम्ख़ार जुदा ॥ सनये यार का गुल रख ये निशां ऐ क़ासिद । तेरे सार से रहो होवेगो दीवार जुदा ॥ बे वफ़ा हुस्न का उसके न बनेगा सौदा । मेरे मुफ़ के खड़े होवें ख़रीदार जुदा ॥ हो न हमसर तेरी ज़ुल्फ़ों से नफ़्शा सुम्बुल । जिसके हर पेंच में एक दिल है गिरफ़्तार जुदा ॥ हो रोना है जो हम खाना ख़राब चोखों का । बाम से दर है जुदा दर से है दीवार जुदा ॥ ज़िन्दे को क़त्ल किया मुरदे को ज़िन्दा आतिश । फ़ितनए हश्र से है यार की रफ़्तार जुदा ॥

—:§:—

लागबाज़ी

आग खाने की तरकीब

कपास के टुकड़े को जला कर कोयला कर लो और मुंह में नौसादर और अकरक़रहा पीसकर दबा लो वक़्त तमाशा कपास के कोयला की आग बनाकर मुंह में डालते जाव ॥

बग़ैर खूंटी की खड़ाऊं पर चलना

घुनची पानी में घिसकर लुआब निकाल लो इस लुआब को खड़ाऊं पर मलकर खुश्क करो और पांव को नम कर लो और पैर उस पर जमा दो कभी २ चलते वक़्त पांव के ऊपर पानी भी डाल दो तो हर्ज नहीं है ॥

बोतल में अण्डा उतारना

एक अण्डे को सिरके में तीन चार रोज़ तक रक्खो लेकिन सिरके में थोड़ा सा नौसादर ज़रूर मिलाओ जब नरम हो तब फ़ौरन सिरके में से निकाल के बोतल में डाल दो और ताज़ा अण्डा याने जिस वक़्त मुर्ग़ी अण्डा दे उसी वक़्त बोतल में डाल दो तो आसानी चला जायगा ॥

बिजली आग पैदा करना

ऊंट की सेंगनी जलाकर शहद में बुझावे और एक डिब्बी में बन्द करके रख ले जिस वक़्त दो टुकड़े सेंगनी के रगड़के रुई में रक्खे उसी वक़्त आग पैदा हो जावेगी ॥

कपड़ा आग पर रखने से न जले

कबूतर या मुर्ग़ी के अण्डे की सफ़ेदीके साथ थोड़ी फिटकरी मिलाकर कपड़े में लगावे और कपड़े को नमक के पानी से धोकर सुखा डाले फिर वह कपड़ा आग पर रखने से न जलेगा ॥

निशाना लगाना और कपड़ा न फटे

इन सब को एक साथ मिलाकर किसी कपड़े में बांधो और उस की पोटली बनाओ पोटली को एक दरख़्त को सब से ऊपर वाली डाल में बांधकर आग लगा दो और ज़रा सा हिला दो तो उस पोटली को तमाम रुया झुनकर सब पत्तों पर फैल जायेगी और ऐसा दिखपड़ेगा कि तमाम दरख़्त में आग लगी है ॥

आदमी बदशिकल मालूम हो

अमलबेद और लाल कनेर के फूल भंगा के पीस लो मिकदार को कुछ जरुरत नहीं है थोड़ी २ दोनों चीज़ें होना चाहिये पीसने से चूरन सा हो जायेगा इस चूरन से एक आईने को मांजकर रख दो जो आदमी इसमें अपना मुंह देखेगा बद सूरत दिखलाई पड़ेगा ॥

शराब का दूध बनाना

आम की मौर तोड़ के रख छोड़ो उस को धूप में सुखा लो जब सूख जाय तब पीसकर चूरण बना लो न वक्त तमाशा चूरण को शराब में डाल दो शराब की रंगत तबदील हो जावेगी और मिस्ल दूध नज़र पड़ने लगेगी ॥

कांच पर हरफ़ लिखना

एक कांच का तख़्ता लेकर आग पर गरम करो थोड़ा गरम होने बाद मोम की डली उस पर ऐसो घुमाव कि मोम चारों तरफ़ उसके चिपका जाय फिर जो लिखना चाहो वह सूजी की नोक से मोम पर लिखो इस तरह से कि हरफ़ों की जगह का मोम खुद जाय (अगर मोम अच्छी तरह न निकलेगा हरफ़ साफ़ न आवेंगे) ऐसा करने पर मुर्दासियार (यह एक अंग्रेज़ी मसाला है इस को बारीक बुरको मोम निकाली हुई जगह पर याने हरूफ़ों पर छोड़ दो फिर ८ हिस्सा पानी और १ हिस्सा गंधक का तेज़ाब इन दोनों को मिला कर जहां २ बुरको डाली है वहां २ डाल दो और उस कांच के तख़्ते को दो घंटे तक वैसा ही रक्खा रहने दो (ज्यादा न रखना चाहिये नहीं तो कांच कट जाता है और हरूफ़ पार पार निकल जाते हैं) बाद दो घंटे के उस कांच के तख़्ते को पानी में धो डालो हरफ़ उभरे हुए नज़र पड़ेंगे ॥

तलवार या किसी हथयार पर आसमानी हरूफ लिखना

लोहे की छड़ें लेकर उन पर हथियार रखके आग पर गरम करो गरम होने से हथियार पर एक तरह का रंग सा आ जायगा जब रंग आजाय तब उस पर वारनिश में कोई रंग मिलाकर कलम से जो लिखना हो लिखो जब हरूफ सूख जावें तब एक चिनी के बर्तन में एसेटिक एसिड (यह एक अंग्रेज़ी मसाला है और पानी मिलाकर हथयार पर डालो ऐसा करने से हथयार पर की रंगत निकल जायगी हरूफ भर रह जायगी अब हथयार को ठंडे पानी में देर तक भिगाव और इसके बाद हरफ़ों को पानी से खूब धो डालो धोने से वारनिश निकल जायगा और हथयार पर आसमानी रंग के हरूफ साफ दिख पड़ेंगे ॥

कुम्हड़े की बौल लगाई जाय और उसमें कुम्हड़े में फरकार भटा फलें

कुम्हड़े की बौल जब छोटी रहे तब उसका सिरा काट कर (यानि जहां से काटा जाय) उसमें भटे के बीज घी और शहद में घोलकर भर दो इसके वास्ते बीज को थोड़ा घोर देना ठीक होता है जब बौल और के बीज भर दिया गया तब उस पर एक कपड़े की पट्टी लपेट दो जिससे बीज न गिरें अब इस बौल में जो कुम्हड़े फरेंगे उन कुम्हड़ों का बीज फिर बोने से बौल कुम्हड़ों को रहकर भटे फलेंगे देखनेवालों को ताज्जुब होगा ॥

ऊनी कपड़ों में कीड़ा न लगे

ऊनी कपड़े के हर एक तह में थोड़ा २ कपूर (बारीक काटकर या डलो) रख देना चाहिये इस से कभी भी कीड़ा नहीं लगता ॥

जानवरों के सींग चाहे जैसे नवाना, मुड़याना या सीधे करना,

लकड़ी की राख पाव सेर और चूना १ सेर डेढ सेर पानी में पकाव जब यह सब चीज़ें पक कर पाव सेर रहजांय तब सींग पर उस को खूब लगाकर ऊपर से कपड़ा बांध दो और चार रोज़ तक बधा रहने दो बाद चार रोज़ के यानी पांचवें रोज़ भाप में थोड़ा तेल लगाकर सींगको धीरे २ मुलायमियत के साथ चाहे जैसा झुकालो ॥

पेढ़ में विना मौसम के फल लगें

इस को ज़रा सी तरकीब है खात जो दी जाती है इस में चूना औ नौसादर इन दोनों को मिला के इन को खात देना चाहिये किसी दरख़ में दी जाय विना मौसम के फल फलेंगे ॥

शराब का नशा उतारना

इस की कई हिदायतें हैं अकसर लोग कहते हैं कि मीठा तेल कान में डालने से नशा उतर जाता है या राहर की दाल के छिलके को थोड़ी देर पानी में भिंगोकर वह पानी पिला देने से नशा कम होजाता है या फिटकरी को भून कर बताशे में खिला देने से नशा उतर जाता है लेकिन उमदा तरकीब नशा उतार ने की यह है वर वक्त नशा आधी छटाक या छटाक भर घी और इसी क़दर शक्कर इन दोनों चीज़ों का लड्डू सा बना के खिलाने से फ़ौरन नशा उतरता है ॥

चिराग़ बुझादो और फिर आप से जल उठे

एक बरतन में गंधक डालकर आग पर टिघलाव फिर उस टिघले हुये गंधक में आधा शोरा डालकर दोनों को एक करो फिर उस में बत्तियां भिंगोकर रख छोड़ो इन बत्तियों को सुलगा कर फिर बुझा देने से ये बत्तियां थोड़ी देर में आप से जल उठेंगीं ॥

रात को कपड़ा आग सा दिखे

माल कांगनी का रोग़न, हरताल, मैनसिल इन तीनों को मिलाकर कपड़े में मले उस कपड़े को पहिने या ओढ़े तो वह कपड़ा मिसले आग नज़र पड़ेगा ॥

आग को हांथ पर उठालो हांथ न जले

मेंडक की चर्बी और केंचुआ बराबर लेकर हाथों पर मल ले और आग उठाले हाथ न जलेगा ॥

बिच्छू पकड़ ने को और उस के ज़िहर उतारने की तरकीब

अज्जाझारे की जड़ हाथ में लेले और इस को बिच्छु के डंक में छुला कर बिच्छू पकड़ ले और इसी जड़ को जिस जगह बिच्छू काटे उस जगह थोड़ी घी घिस के लगा देने से ज़िहर फ़ौरन उतर जाता है ॥

पोशीदा चिट्ठी लिखना

. मूली या पयाज़ के अरक से कागज़ पर लिखे हरूफ़ मालूम न पड़ेंगे लेकिन आंच दिखलाने से पीले हरूफ़ नज़र पड़ने लगेंगे और भी राई के कुहारे को तीन दिन पानी में भिगोकर उससे लिखे हरूफ़ न दिखेंगे लेकिन आंच दिखलाने से सुर्ख़ हरूफ दिखाई पड़ने लगेंगे इसी तरह से दूध में नौसादर मिलाकर लिखने से और आंच दिखलाने से पीले हरूफ दिखते हैं ॥

अद्भुत हिसाब

कोई भी अंक लेने से आखीर के गुणाकार से १०० ही आवेंगे

कोई भी अंक लेलो जो अंकलो उस को ३ से गुणा दो गुणाकार जो आवे उस में २ जोड दो फिर जो आवे उसे १० से गुणाकार १५ का भाग दो जो शेष बचे उस को २० से गुणदो १०० आ जायगा.

अंक × ३ + २ × १० – १५ अब शेष बचा हुआ अंक × २० = १००

॥ इति ॥